चलते-चलते

डॉ. सुशीला टाकभौरे
मो. 9588442591

कार एल.आय.सी. चौक के बस स्टॉप के पास रुकी। अग्रवाल सर को यहाँ उतरना था। इसके बाद बर्डी जाने के लिए कार आगे बढ़ी। बर्डी का पूरा नाम सीताबर्डी है। रेड सिग्नल होने के कारण कार एल.आय.सी चौक पर रुक गई। सुपरवायजर डॉ. दीपक सर कुछ देर सामने देखते रहे। फिर उन्होंने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए अपनेपन से कहा, 'मैडम अब पहले जैसी बात कहाँ रही है? अब सब कुछ बदल गया है... पूरी समाज व्यवस्था बदल गई है...'

मैंने उनकी बात के समर्थन में कहा, 'जी सर, अब पहले जैसी बात नहीं है। बहुत बातें बदली हैं, और बदल रही हैं। लेकिन आप किस संदर्भ में कह रहे हैं?'

सर उत्साह के साथ बोले, 'अपने नागपुर में तो बिल्कुल नहीं है। नागपुर क्या पूरे महाराष्ट्र में नहीं है। मैं तो कहता हूँ, अब पूरे देश में वह बात नहीं है। छुआछूत जाति भेद अब कहाँ है?'

सर की इस बात से मैं सहमत नहीं थी। मैंने कहा, 'जी सर... लेकिन...' मैं चुप हो गई, इस समय सुपर-वायजर सर से वाद-विवाद करना ठीक नहीं लगा। मैं जानती हूँ, ब्राह्मण सर की बड़ी बेटी पल्लवी ने बिहार के एक दलित जाति में जन्मे इंजीनियर लड़के से कोर्ट मैरिज कर ली है। वे दोनों पांच साल से बाम्बे में साथ-साथ रहकर एक ही कंपनी में नौकरी कर रहे थे। पिछले माह शादी कर ली। मैंने सोचा, शायद इसीलिए सर ऐसी बातें कर रहे हैं।

हमारे कॉलेज में छह दिसम्बर को 'डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर महापरिनिर्वाण दिन' का कार्यक्रम लिया गया था। कार्यक्रम में सर भी थे, कार्यक्रम में हुए भाषण और सामाजिक समानता की बातों का प्रभाव भी शायद सर को प्रभावित कर रहा था। वे स्वयं को सामाजिक समानता का पक्षधर बताते हुए, बड़े आग्रह के साथ अपना मन्तव्य मुझे बता रहे थे।

ग्रीन सिग्नल मिलते ही कार तेजी से आगे बढ़ी। रिजर्व बैंक चौक से मीना बाजार, मॉरिस कॉलेज होकर बर्डी जाना है। मीना बाजार के विशाल मैदान में खिलाड़ी लड़कों की टीम हॉकी और क्रिकेट खेल की प्रेक्टिस कर रही थी। सर उन्हें बहुत ध्यान से, अपनेपन के साथ देखने लगे। मैंने रिजर्व बैंक

चौक पर ऊंचे आसन पर स्थित बाबासाहब की आदमकद मूर्ति को देखा। उन्हें देखने के बाद कार के अंदर मुझे उमस महसूस होने लगी। दिसम्बर की ठंडी से बचने के लिए, कार के सभी शीशे बंद थे।

महाराष्ट्र विधान सभा का शीतकालीन सत्र नागपुर में शुरू है। इन दिनों सुबह दस बजे से शाम पांच बजे तक यह रास्ता बंद रखा जाता है। मोर्चे, जुलूस, प्रदर्शन, मूक मोर्चा आंदोलन, इन सबके कारण इस रास्ते पर आम लोगों का चलना कठिन होता है। बर्डी में व्हेरायटी चौक के पुलिस थाने से 'टी. प्वाइन्ट', 'गोवारी चौक', 'जीरो माईल' होकर रिजर्व बैंक जाने वाला यह रास्ता पुलिस बंदोबस्त में मोर्चो के लिए आरक्षित है। जुलूस, मोर्चे बर्डी पुलिस थाने के सामने से शुरू होकर कलेक्टर ऑफिस के सामने वाली रोड तक जाते हैं। वहां सुरक्षा बल द्वारा उन्हें रोक दिया जाता है। वहां से उनके प्रतिनिधि मंडल के पांच या सात लोग ही अपनी मांग लेकर कलेक्टर ऑफिस जा पाते हैं।

महाराष्ट्र की उप-राजधानी नागपुर के विधान सभा के शीत सत्र में मंत्रियों के समक्ष प्रदर्शन करके, अपनी समस्याएं और मांग के प्रस्ताव रखे जाते हैं। दस-बारह दिन के शीतकालीन सत्र में जिस दिन बड़े मोर्चे नहीं रहते और छोटे मोर्चो की संख्या कम रहती है, उस दिन यह रास्ता खुल जाता है। बर्डी से रिजर्व बैंक चौक तक मोर्चे, जुलूस, प्रदर्शन, मूक आंदोलन का क्रम लगातार आठ-दस दिन चलता है।

बाबासाहब डॉ. भीमराव आंबेडकर का स्टेच्यू देखते ही वे जलसे, जुलूस भीड़ और कार्यक्रम मुझे याद आ गये। बाबासाहब को मानने वाले, बाबासाहब के नाम पर अपने अधिकारों की मांग करने वाले, सबसे पहले यहाँ बाबासाहब को फूलों के हार पहनाते हैं, उनके कार्यो और उनकी कुर्बानी को याद करते हैं, फिर उनके नाम के नारे लगाकर मीटिंग, धरना, जुलूस, प्रदर्शन और आंदोलन के कार्यक्रम शुरू करते हैं। तब चारों तरफ जयघोष का नारा गूंजता है ,

'बाबासाहब जिंदाबाद, '

'डॉ. आंबेडकर जिंदाबाद, '

'बाबासाहब विजयी हो'

मेरे कानों में ये आवाज सुनाई देने लगी। सुपरवायजर सर कह रहे थे, 'मैडम, अब पहले जैसी बात नहीं रही। आप देखना, धीरे-धीरे लोग जात, पांत को भूल जाएंगे। जातिभेद जैसी कोई बात ही नहीं रहेगी,'

सर की बात सुनकर मैं चुप रही। मैं जानती हूँ, सर बहुत ही पुराने ख्याल के हैं। सच कहो तो वे पुराणपंथी हैं। वे जाति, भेदभाव को अभी भी मानते हैं। केवल इतना ही नहीं, जाति भेद की समाज व्यवस्था को वे अभी भी जरूरी मानते हैं, क्योंकि उच्च वर्ण होने की उनकी श्रेष्ठता इसी में संभव है। वे स्वयं कभी नहीं चाहेंगे कि जाति भेद खत्म हो।

'जातिभेद मिट रहा है, धीरे-धीरे पूरी तरह मिट जायेगा।' यह कहना सरल है। वैसे यह अच्छी बात है मगर जातिभेद अभी कम कहाँ हुआ है? ऊपरी व्यवहार की सौजन्यता सामाजिक जड़ मानसिकता का आईना नहीं हो सकती। उस आईने का चेहरा बहुत वीभत्स है। उसे छिपाने के लिए ही सौजन्यता का ताना-बाना ओढ़ा जाता है। शायद इसीलिए सुपरवायजर सर बार बार कह रहे हैं, 'मैडम, अब जात पांत को कोई नहीं मानता है।'

शहरों में भी छुआछूत है। नागपुर शहर में भी है। लोग मुँह पर नहीं कहते, सज्जनतावश जाहिर नहीं करते मगर उनके मन में जातिभेद रहता है। शिक्षित, उच्च शिक्षित, उच्च पदों पर आसीन दलितों के प्रति भी जातिभेद रहता है। जब इनके प्रति भेदभाव है तब अनपढ़ गरीब सफाई कार्य के रोजगार से जुड़े लोगों के प्रति कैसा भाव रहता होगा? जब शहरों में छुआछूत, भेदभाव का यह हाल है, तब गांवों में कितना रहता है? इसकी कल्पना की जा सकती है। अभी भी ऐसी घटनाएँ घटती हैं। खुल्लमखुल्ला जातिभेद मानने वाली कर्णकटु बातें कही जाती हैं।

कार जीरो माईल और गोवारी स्मारक से आगे बढ़कर टी. प्वाइन्ट के ट्राफिक सिग्नल पर रुकी।

'गोवारी शहीद स्मारक' देखकर मेरी आँखों के सामने पिछले दिनों हुई घटना सजीव हो गई। मुझे वे दृश्य याद आ गये, बेचारे गोवारी आदिवासी लोग! अपने अधिकारों की मांग के लिए जुलूस निकालकर आंदोलन कर रहे थे। सामने महिलाएँ थीं, बच्चे थे, पीछे पुरुष थे। गोवारी समाज के नेता और आंदोलन के अन्य नेता जुलूस के आजू-बाजू नारे लगाते हुए चल रहे थे। पुलिस ने जुलूस को रोका। महिलाएं कुछ समझी नहीं, वे नारे लगाती हुई आगे बढ़ती गई। पुलिस ने इसे उनकी धृष्टता समझा और अंधाधुंध गोलियां चलाना शुरू कर दिया। सड़क पर औरतों, बच्चों की लाशें बिछ गई। खून के फब्बारे बह निकले। सब लोगों में चीख पुकार मच गई। जो गोली से नहीं मरे, वे भगदड़ में एक दूसरे को रौंद कर घायल हो गये। उन्हें रोकना,

समझाना, संभालना मुश्किल हो गया।

नागपुर की यह बहुत ही दुखद और हृदय को चीर देने वाली घटना थी। गरीब आदिवासी गोवारी महिलाएँ, जिनके बदन पर पूरे कपड़े भी नहीं थे। आधी साड़ी का टुकड़ा घुटने तक ऊंचा कमर में बंधा था, ऊपर फटी पुरानी अंगिया थी। साथ लाये सामान की छोटी पोटली सिर पर थी। उन्हें घबराहट में न खुद का होश था, न अपने कपड़ों का। सुबह से भूखे प्यासे आंदोलन के लिए आये लोग, अपने अधिकारों के लिए लड़ रहे थे। अधिकारों की लड़ाई लड़ते, लड़ते वे शहीद हो गये। अखबारों में कई दिनों तक समाचार छपते रहे। कई सामाजिक संस्थाएं भी 'टी प्वाइंट' के उस स्थान को देखकर, न्यूज बनाकर प्रकाशित करती रहीं। कितनी औरतें, कितने पुरुष, कितने बच्चे मारे गये थे! सरकारी आंकड़ा बहुत कम संख्या बताता रहा। पूरे देश में गोवारी हत्याकाण्ड की चर्चा और निन्दा हुई। पत्रकार नेता और स्वयंसेवी संस्था के लोग दूर-दूर से, 'गोवारी हत्याकाण्ड' का स्थल देखने आये। उन्होंने सच्ची जानकारी ली और अपने अपने ढंग से अपनी सच्ची रिपोर्ट छापी।

'गोवारी हत्याकाण्ड' को देखकर नागपुरवासियों के दिल दहल गये थे। खून से लाल हुई जमीन को देखकर लोगों के दिल कांप उठते थे। कई दिनों तक पुलिस की निन्दा हुई, उनके लिए सस्पेंड, ट्रान्सफर जैसी कार्यवाही भी होती रही। उन नेताओं की भी निन्दा हुई, जिनके नेतृत्व और मार्गदर्शन में यह जुलूस निकाला गया था। 'महिलाओं और बच्चों को ही सामने क्यों रखा गया?' इस बात पर कई प्रश्न और आक्षेप उठाये गये थे।

जो होना था, वह हो चुका था। इसके साथ यह भी पता चला कि न्याय और अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ना कितना कठिन काम है। शायद यह सोचकर ही हमारे लोग किसी आंदोलन में भाग नहीं लेते हैं, वे अपनी जान जोखिम में नहीं डालते हैं। वे जैसे हैं उसी हालत में खुश हैं। भोले-भाले आदिवासी शुरू से ठगे जाते रहे हैं। इतना होने पर भी उन्हें न्याय नहीं मिला। कई दिनों तक विरोध प्रदर्शन धरना, भूख हड़ताल के रूप में आंदोलन चलता रहा। तब कहीं उन्हें कुछ लाभ मिल सका। शहीदों के परिवार को राहत राशि दी गई। नौकरियों का आश्वासन दिया गया। 'गोवारी हत्याकांड' घटना की स्मृति में 'गोवारी शहीद स्मारक' बनाया गया।

गोवारी शहीद स्मारक के रूप में कई संगीनें सब तरफ निशाना ताकते हुए हैं। इन संगीनों को देखकर, उस दिन का गोवारी हत्याकाण्ड हर क्षण उजागर होता रहता है। इस शहीद स्मारक के छोटे घेरे में, हरी घास पर चरती बकरियों के पुतलों को चराते गोवारी आदिवासी स्त्री, पुरुष के छोटे-छोटे पुतले और सिर पर लकड़ी का गट्ठर लिए, गोवारी आदिवासी स्त्रियों के पुतलों को देखकर मन द्रवित हो गया। टी. प्वाइन्ट से आगे वर्धा रोड की ओर जाने वाले उड्डान पुल को 'आदिवासी गोवारी शहीद उड्डान पुल' नाम देकर गोवारी आंदोलन को सम्मान दिया गया है। 'गोवारी शहीद स्मारक' के सामने सड़क के उस पार देश का हृदय स्थल 'जीरो माईल' है। एक ऊंचा स्तम्भ, जहाँ से देश की सब ओर की दूरी नापी गई है। 'गोवारी शहीद स्मारक' भी 'जीरो माईल' की तरह अपना विशेष महत्व रखता है।

गोवारी आदिवासी लोगों के प्रति मेरा हृदय सम्मान से भर गया। तभी याद आये हमारे जाति समुदाय के लोग, जिनके प्रति छुआछूत के विषय में सुपरवायजर सर बता रहे थे। सफाईकर्मी लोग ... क्या आज भी उनकी हालत बदली है? जो अपने ऊपर होने वाले अन्याय को नहीं समझते, वे कब न्याय और अधिकार की बातों को समझेंगे? क्या वे अपनी स्थिति बदलने के लिए इस तरह आंदोलन कर सकते हैं? अपनी कौम के लिए, अपनी आने वाली पीढ़ियों को अधिकार दिलाने के लिए क्या वे इस तरह शहीद हो सकते हैं?'

मेरा हृदय अंदर ही अंदर अलोड़ित हो गया। हमारे लोग कितने अपमान का जीवन जीते हैं? पीढ़ी दर पीढ़ी आज भी वही हालत है। कैसे जीते होंगे वे लोग नरक सफाई का काम करते हुए, नारकीय जीवन! इस जीवन की यातना कैसे सहते होंगे? बताने वाले उनके विषय में, उनके काम के विषय में कितनी सहजता से कहते हैं। वे क्या समझेंगे उनकी पीड़ा, उनका दर्द!

मैं बाहर दूर देखती हुई अपने विचारों में खोई थी। सर बार-बार पूछ रहे थे, 'मैडम आपको बर्डी उतरना है न? व्हेरायटी चौक आ गया। आपको यहीं उतरना है न?' मैंने कहा, 'जी सर' लेकिन तब तक ट्रैफिक सिग्नल की ग्रीन लाइट शुरू हो गई थी। सर ने कहा, 'मैडम, अब आप रानी झांसी चौक पर ही उतरिए।'

मैंने देखा कार 'मून लाइट' फोटो स्टुडियो के सामने रुकी है। सीताबर्डी किले की दीवार कब गुजरी, कब बिना

कलश का मंदिर 'मुण्डा देवल' पीछे छूटा, मैंने नहीं देखा। व्हेरायटी चौक पर मैंने सबसे पहले रोड के उस पार खड़े गांधीजी को देखा। अधिकांश गांव और शहरों में नगर परिषद, नगर निगम, नगर पालिका और महानगर पालिका के सामने गांधीजी की मूर्ति बड़े श्रद्धाभाव के साथ इसी तरह स्थापित की गई है, लोग कहते हैं, उन्होंने अछूतोद्धार का काम किया था। मेरा घायल मन तड़प उठा, क्यों हमारे लोग गांधीजी के प्रति इतनी श्रद्धा रखते हैं? क्योंकि वे जानते ही नहीं हैं कि गांधीजी का असली चेहरा क्या है। मुझे याद आया, जब व्हेरायटी चौक से गांधीजी की मूर्ति हटाई गई थी।

व्हेरायटी चौक पर कार, स्कूटर व आटो के भागते पहियों पर जन समूह बहता नजर आता है। सामने चौक के उस पार हाथ में लाठी लिए ऊंचे चबूतरे पर गांधीजी का पुतला खड़ा है। पहले यह पुतला इस चौक के बीच में था। वैसे यह नागपुर शहर की विशेषता है। पहले यहाँ हर चौक के बीच एक पुतला जरूर रहता था। इस कारण इसे पुतलों का शहर भी कहा जाने लगा था। फिर धीरे-धीरे रोड चौड़े होते गये, शहर की आबादी बढ़ती गई। बढ़ते शहर के बढ़ते विकास के साथ और सड़क चौड़ीकरण के साथ पुतलों के चबूतरों का घेरा छोटा होता गया। फिर एक समय ऐसा आया कि पुतलों को बीच चौक में सड़क पर रखना कठिन हो गया। तब यातायात की सुविधा के लिए, बड़ी सड़कों और बड़े चौक के पुतलों को उठाकर, वहीं आसपास किनारों पर स्थानापन्न किया जाने लगा।

रानी झांसी चौक की झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को घोड़ी सहित उठाकर, हिंदी मोर भवन के सामने की सड़क के उस पार स्थापित किया गया। मगर यह सच है, उनकी जो शान बीच चौक में थी, वह बाद में नहीं रही। झांसी की रानी का पुतला बस पुतली बनकर रह गया। इसी प्रकार जब गांधीजी के पुतले को बीच चौक से उठाया गया था, तब बर्डी में व्हेरायटी चौक पर लोगों की बहुत भीड़ जमा हुई थी। गांधीजी को हटाये जाने का विरोध भी हुआ मगर जनता की सुविधा और शासन के आदेश के सामने चुप रह जाना पड़ा। गांधी-वादी दुख के आँसू पीकर चुपचाप देखते रहे। गांधी विरोधी पार्टी के लोग दिखावे के दुख के साथ चुप रहे। आम जनता चुप रही।

गांधी जी का पुतला हटाने में और झांसी की रानी का पुतला हटाने की बात में बहुत अंतर था। झांसी की रानी बस झांसी की रानी है, मगर महात्मा गांधी पूरे देश के राष्ट्रपिता हैं। कहते हैं, उनके राष्ट्रीय आंदोलन के पीछे पूरा देश था। पूरा देश उनकी भक्ति में अंधा था। मगर ये सब बातें गांधीवादी ही कहते हैं। शुरू से उनके भी कई विरोधी थे, अभी भी हैं। इसी देश के लाखों देशवासी उनके विरोधी हैं।

गांधीजी का पुतला हटाये जाने के समय की तस्वीर खींची गई। 'मून लाइट स्टूडियो' के बगल की 'श्याम होटल' के ऊपर छत पर चढ़कर फोटो खींची गई। गांधीजी का मुख उसी दिशा में था। पेशेवर फोटोग्राफर और पत्रकारों ने बड़ी तकनीक के साथ फोटो खींचे। दूसरे दिन सभी अखबारों में गांधीजी को उठाये जाने के फोटो छपे।

इस समय की अलग-अलग झलकियाँ इस प्रकार थीं, गांधीजी को उठाने के लिए क्रेन खड़ी है, क्रेन के ऊंचे उठे हुक में एक फंदा लटक रहा है। जमीन से दस-बारह फुट की ऊंचाई पर गांधीजी के गले में फंदा लगाया गया है। क्रेन के हुक ने फन्दे को ऊंचा खींचकर, गांधी जी को ऊपर उठा लिया है। कई लोगों ने कई अखबारों में ऐसी तस्वीरों को बहुत रस लेकर रुचि के साथ क्रमबद्ध छापा। कई लोगों ने गांधी जी के ऐसे ऐतिहासिक चित्रों को संग्रह करके रख लिया। मैं यह सब इसलिए याद कर रही हूं कि यह भी हो सकता है, ऐसा हुआ है। क्यों नहीं होना चाहिए? कोई कभी किसी बात की कल्पना भी नहीं कर पाता है, तब भी वह काम या घटनाएं होती हैं। इस दुनिया में असंभव कुछ भी नहीं है। गांधीजी जिस तरह पूरे देश के हृदय में बैठे हैं, उनकी सच्चाई जानकर उनसे पीड़ित लोग उन्हें कम से कम अपने हृदय से तो निकाल सकते हैं।

आज वही गांधीजी व्हेरायटी चौक के बीच से हटाकर आनंन्द भंडार की ओर जाने वाली रोड की बगल में, चौक के बाजू में स्थानापन्न हैं। उनके पीछे दुकाने हैं मगर उधर उनकी पीठ है। चौक की तरफ मुँह है। हर दो-चार दिन में वहां धरना, मीटिंग, अनशन, नारेबाजी, पोस्टर प्रदर्शन जैसे कार्यक्रम चलते रहते हैं। वहाँ कार्यक्रम में उपस्थित दस-पंद्रह लोगों को, रास्ता चलते लोग चलते-चलते देखते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। सुरक्षा के लिए वहाँ पुलिस रहती है। फोटो लेने के लिए पत्रकार और फोटोग्राफर आते हैं। न्यूज तैयार होने पर कार्यक्रम समाप्त होता है। जिन्होंने चलते-चलते वे कार्यक्रम देखे थे, वे और सभी लोग दूसरे दिन उस न्यूज को विस्तार के साथ समाचार पत्र

में पढ़तें हैं। आँखों देखे हाल से काफी बढ़ा-चढ़ाकर समाचार पत्रों में छपे समाचारों को पढ़कर, बात पूरी तरह समझ में आती है। कुछ लोग कहते हैं, इसी का नाम राजनीति है।

व्हेरायटी चौक से झांसी रानी चौक तक पैदल जाना बड़ा कठिन काम है। पांच रास्तों का बड़ा चौक होने के कारण इस चौक पर ट्राफिक ज्यादा रहता है। ग्रीन सिग्नल मिलते ही लोग फर्राटे से भागते, मुड़ते, उड़ते, हवा से बातें करते हुए गाड़ी चलाते हैं। बेचारे पैदल चलने वाले खुद को बचाते हुए परेशान हो जाते हैं। बीच सड़क पर ट्राफिक रहता है, सड़क के किनारे फुटपाथ से लेकर सड़क तक दुकानें ही दुकानें हैं। जूते, चप्पल, कंघे, मोजे, टोपी, थैली, बैग, बेल्ट व सस्ती घड़ी आदि कई सामान। 'रस्ते का माल सस्ते में', हर दुकान वाला हर राहगीर से अपना माल खरीदने का अनुरोध करता। पैदल चलने वाला परेशान, रोज-रोज क्या-क्या खरीदे? कितना खर्च करे?

फुटपाथ की दुकानों के सामने सड़क पर ऑटो खड़े रहते हैं। ऑटो के बगल में ऑटोचालक अपने दोनों हाथ बगल में फैलाकर मानो पैदल चलने वालों को रोकते हुए, अपने ऑटो में बैठने का अनुरोध करते हैं। हर राहगीर से एक जैसा अनुरोध, 'चलिए बहन जी, चलिऐ भैया जी, कहाँ जाना है, ऑटो में बैठ जाइये... आइये... आइये... मीटर से चलिए, ज्यादा नहीं लेंगे।' इतना आग्रह कि न कहना मुश्किल। मुझे हर ऑटो वाले को बताना पड़ता है, 'भैया, हमें सिर्फ झांसी रानी चौक तक जाना है।' तब कहीं जाने देते हैं। झांसी रानी चौक से सवारी रेट से चलने वाले ऑटो मिल जाते हैं। यहाँ से अपने घर जाने में मुझे कोई परेशानी नहीं होती है।

जबसे गोवारी उड्डान पुल (फ्लाय ओव्हर) बना है, तब से वर्धा रोड जाने वाले हल्के वाहनों वाला ट्राफिक ऊपर से जाता है फिर भी नीचे भीड़ कम नहीं हुई। सड़के चौड़ी हो गई, उसी अनुपात में भीड़ भी बढ़ गई। इतनी भीड़ को देखकर मन में विचार आते, 'इतने लोग कहाँ से आ जाते है? क्यों इतना बाहर घूमते हैं? कितना धन है इनके पास खरीदी करने के लिए, बर्डी की बड़ी-बड़ी दुकानों से महंगा सामान खरीदते है, कितनी शान से रहते हैं, सम्पन्न, सवर्ण बस्तियों के लोग!'

सुपरवायजर सर का स्वर मेरे कानों से बार-बार टकरा रहा था, 'मैडम, अब जात पांत कोई नहीं मानता है,' सर की यह बात अब मुझे असहनीय लगने लगी।

लेकिन सर को तो आज अपने मन की बात कहना ही था। वे मेरी तरफ मुड़कर बहुत अपनेपन के साथ बोले, 'मैडम, अभी-अभी की बात है बस कोई तीस साल पहले की बात है। पहले वही सिस्टम था, पुराना सिस्टम। खुद हमारे घर ड्राय सिस्टम था। वे लोग टोकरा लेकर सफाई का काम करने के लिए आते थे। वो सब अपने सिर पर उठाकर ले जाते थे। हमारे जोशी वाड़ी में ऐसे ही पाखाने थे। पाखाने साफ करने की वही पद्धति थी। जोशी वाड़ी में तब अधिकांश घर ब्राह्मणों के थे।'

सर बता रहे थे, हम लोग महीने भर का उन्हें एक या दो रुपया दिया करते थे। हमारी ज्वाइंट फैमली थी। पूरे कुटुम्ब परिवार का सिर्फ एक या दो रुपया देते थे,' फिर उन्होंने याद करते हुए कहा, 'पहले अठन्नी ही दिया करते थे। बाद में एक या दो रुपया देना पड़ता था। हर घर से महीने भर में उन्हें इतना ही मेहनताना मिलता था। साथ में कुछ फटे, पुराने कपडे, कुछ खराब अनाज या बचा-खुचा जूठा खाना बगैरह भी उन्हें देते थे।'

सर की बातें सुनकर मुझे उन पर गुस्सा आया। मैं सोचने लगी , सर ने मेरे सामने सफाई के काम की चर्चा क्यों की? आखिर वे इन बातों के द्वारा मुझसे क्या कहना चाहते हैं? कहीं वे इन बातों से मुझे यह याद दिलाना तो नहीं चाहते कि मैं कौन हूँ? मैं क्या हूँ? मेरे जाति-समुदाय का रोजगार क्या है? कहीं वे मुझे मेरी जाति का एहसास कराने के लिए तो ऐसा नहीं कह रहें हैं? वह भी इतने अपनेपन से? यह तो सरासर उनकी दुष्टता है।

मेरा मन कुंठित हो गया, पीड़ित हो गया। राहत के लिए मैं बाहर देखने लगी। सर कुछ कह रहे थे। मैं उनकी बातों को अनसुना करते हुए बाहर देखती रही।

मुझे वह दिन याद आया जब इन्हीं सुपरवायजर सर को मैंने पूरे स्टाफ के सामने खूब खरी खोटी सुनाई थी। वे हमेशा मुझपर यह दोष लगाते थे कि मैं लेट आती हूँ, मैं क्लास नहीं लेती हूँ। उस दिन मैं ग्यारह बजे के पहले कॉलेज में थी ठीक समय पर ग्यारह बजे क्लास लेने गई। मेरी क्लास में चालीस स्टुडेंट थे। पीरियड लेने के बाद मैं सर के ऑफिस में आई। सर मुझे देखकर कहने लगे, 'मैडम आज भी आप लेट आई हैं आपकी क्लास नहीं हुई आपकी क्लास के बच्चे यहाँ बताने आये थे कि आपका क्लास नहीं

पृष्ठ सं. 46 पर शेष भाग

देख आऊं।' मालती ने जवाब दिया '–बहुत अच्छा किया बहन जी और नहीं तो क्या पड़ोस में तो आना-जाना ही चाहिए।'

मालती उस स्त्री से औपचारिक बातचीत तो कर रहीं थी पर मन उनका हाल के घटनाक्रम से बहुत क्षुब्ध था।

हंगामा खड़ा करने का उनका कोई मकसद न था किंतु एकदम चुप्पी साधना भी उन्हें अनुचित लग रहा था। शर्माइन के दोगले व्यवहार का उसे एहसास कराना जरूरी था और कुछ देर बाद उन्हें मौका भी मिल गया।

कुछ सामान निकालने के लिए शर्माइन स्टोर की ओर जाती हुई दिखी उसे पता था कि इस घर का स्टोर पीछे की तरफ कुछ आड़ में है वह भी शर्माइन के पीछे हो लीं! शर्माइन अपनी धुन में इतनी व्यस्त थी कि उनके आने का उसे तनिक भी आभास ना हुआ।

स्टोर में पहुंचते ही मालती तनिक रोष से बोली, 'क्यों बहन जी, मुझ में के कांटे लगे थे जो मेरे पैर छूने से बहू को तुमने रोक दिया। चार लोगों में म्हारी बेज्यती करके तुम्हें क्या मिला।'

मालती की तिलमिलाहट चरम पर थी, शर्माइन को इस अप्रत्याशित वार की अपेक्षा न थी। उसे कुछ न सूझा कि क्या कहे सो अनजान बनने का नाटक करती हुई हकला कर बोली, 'अरे क्या हुआ? क्यों नाराज हो रही हो इतना?'

किंतु उसका फक पड़ा हुआ चेहरा और लड़खड़ाती जुबान सारा भेद खोल दे रही थी।,'सब जानती हो, सब पता है तुम्हें कि क्या हुआ है!' 'घर बुलाकर बेज्जती करना क्या अच्छी बात है।'

इतना कह मालती अपने घर लौट आई, पर आते-आते उसके मन का गुब्बार फूट ही पड़ा, वह बोली, 'जो कूड़ा और गंदगी तुमने मेरे द्वार पर बिखेरी है उसे इसी दम उठवाओ वरना पुलिस और नगर निगम में फोन कराती हूं।

'हलवाई मेरे द्वार के सामने बिठाते तो ध्यान ना आया होगा कि किसका घर है और बहू से पैर छुवाते...।' कहकर मालती जा चुकी थी, पर पीछे रह गई शर्माइन को एक नई चिंता दे गई, उसे कुछ ना सूझा कि क्या जवाब दें। कहीं यह शैतान की खाला सच में ही पुलिस ना बुला ले। लड़कों से कहती हूँ, जल्दी से कूड़ा उठवाने की व्यवस्था करें। बेटे के ब्याह के अवसर पर घर-गाँव से आए रिश्तेदारों के बीच उन्हें कोई बखेड़ा नहीं पैदा करना।❑

पृष्ठ सं. 19 का शेष भाग

हुआ।'

मैंने हैरत के साथ कहा, 'सर आपने ऊपर रूम नंबर सात में आकर नहीं देखा कि मैं क्लास ले रही हूँ। बिना देखे आप कैसे कह रहे हैं कि मैंने क्लास नहीं लिया? मैंने समय पर क्लास में जाकर पीरियड लिया।

सर अपनी बात रखने के लिए कहने लगे, 'आप रोज ही लेट आती हो, आपका क्लास नहीं होता है।' फिर तो मुझे बहुत गुस्सा आ गया , मैं भूल गई कि वे अधिकारी है, मैं गुस्से में जोर से बोली, 'सर आप हमेशा मुझे ऐसा कहते हैं, प्राचार्य जी से मेरी झूठी शिकायत करते हैं। आप मेरे साथ ही ऐसा क्यों करते हैं? आप मेरे साथ भेदभाव करते हैं, मेरे साथ जातिभेद मानते हैं। मुझे जानबूझकर परेशान करते हैं?'

जब बोलना शुरू किया तो आवेश बढ़ता गया, मगर होशोहवास दुरुस्त थे। मैंने सोचा जब इतना बोल ही दिया है तो बाकी का भी बोल देना चाहिए, जो होगा, देखा जायेगा, आफिस के चपरासी बाबू प्राध्यापक सभी की भीड़ लग गई थी। सभी पूछ रहे थे, 'क्या हुआ? क्या हुआ?' सर को गुस्से के साथ देखते हुए मैंने जोर से कहा, 'सर! ये आपका कॉलेज नहीं है, आप यहाँ के मालिक नहीं हो। आपसे बड़े भी कोई हैं। मैं उनके पास जाऊंगी। उनके पास जाकर आपकी शिकायत करूंगी कि आप मेरे साथ भेदभाव, जातिभेद करते हैं। मैं प्रिंसिपल से कहूंगी। मैं मैनेजमेंट से जाकर कहूंगी कि आप यहाँ मेरे साथ अन्याय करते हैं। मुझे जानबूझकर परेशान करते हैं।' ऑफिस में सारे लोग चुप थे, सुपरवायजर सर बगलें झांकने लगे थे। मैंने अपनी बात खत्म की और ऊपर स्टाफ रूम में आ गई।

तबसे सुपरवायजर सर मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार करने लगे थे। वे मेरे साथ हमेशा सम्मान के साथ बातें करते। मेरे घर परिवार के विषय में कुशलक्षेम पूछते रहते थे। मगर आज कुटिलतावश वे पुनः वैसी ही बातें कर रहे थे।

सर ने अपनी बात दोहराते हुए, एक बार फिर कहा, 'मैडम देखना, एक दिन लोग जातपांत को भूल जायेंगे।' यह सुनते ही मैंने ऊंची आवाज में कहा, 'सर, कार रुकवाइए।' उनकी इन बातों को सुनकर मुझे फिर से गुस्सा आने लगा। उनके चेहरे पर मुझे वही पुरानी कुटिल मुस्कान दिखाई दी। कार धीरे-धीरे पेट्रोल पंप के पास जाकर रुकी।❑